TEERTHANKER MAHAVEER UNIVERSITY

(Established under Govt. of U.P. Act No. 30, 2008)
Delhi Road, Moradabad (U.P.)

PhD PROGRAMME

SYLLABUS FOR DISCIPLINE SPECIFIC COURSE IN JAINOLOGY

Course Code: RJNL101	Course Name: जैनविद्या : इतिहास एवं सिद्धान्त	L	T	P	C
		0	0	0	4
उद्देश्य:	जैन धर्म के ऐतिहासिक, दार्शनिक, सांस्कृतिक और साहित्यिक पहलुओं का व्यापक ज्ञान प्रदान करना, जिसमें तीर्थंकर परंपरा, आगम साहित्य, जैन दर्शन के मूलभूत सिद्धांत, प्रमुख आचार्य और विद्वानों के योगदान तथा अनेकांत, स्याद्वाद, और नयवाद जैसे दार्शनिक दृष्टिकोणों की गहन समझ विकसित करना शामिल है।				
पाठ्यक्रम परिणाम:	पाठ्यक्रम के सफलतापूर्वक पूर्ण होने पर, छात्र निम्नलिखित क्षमताओं से परिपूर्ण होंगे:				
परिणाम 1:	जैन धर्म की प्राचीनता, तीर्थंकर परंपरा, अहिंसा मूलक संस्कृति और जैन धर्म के ऐतिहासिक योगदान को गहराई से समझेंगे।				
परिणाम 2:	प्रमुख ग्रंथों की मूलभूत अवधारणाओं और उनकी प्रासंगिकता को व्यावहारिक संदर्भ में लागू करना सीखेंगे।				
परिणाम 3:	जैन सिद्धांतों का वैज्ञानिक और तार्किक दृष्टिकोण से विश्लेषण करेंगे।				
परिणाम 4:	प्रमुख जैन आचार्यों और विद्वानों के विचारों और शिक्षाओं को विभिन्न सामाजिक और दार्शनिक संदर्भों में लागू करना सीखेंगे।				
परिणाम 5:	अनेकांतवाद, स्याद्वाद और नयवाद के दार्शनिक दृष्टिकोण को समझकर जीवन में समावेशी और बहुआयामी नवीन सोच का विकास करेंगे।				
इकाई					
इकाई 1	जैन धर्म की प्राचीनता, तीर्थंकर परम्परा (ऋषभ देव, नेमीनाथ, पार्श्वनाथ, महावीर स्वामी) अहिंसा मूलक संस्कृति, भारत का नामकरण, प्रमुख जैन पर्व एवं तीर्थस्थल, प्रमुख जैन सम्प्रदाय, सल्लेखना संथारा।				
इकाई 2	आगम का स्वरूप, वाचनाएँ, चार अनुयोग, बत्तीस और पैंतालीस आगम, षट्खण्डागम, कसायपाहुड, समयसार, पंचास्तिकाय संग्रह, आचारांगसूत्र, उत्तराध्ययनसूत्र, दशवैकालिकसूत्र, तिलोयपण्णत्ती तथा तत्त्वार्थसूत्र का सामान्य अध्ययन				
इकाई 3	पंचास्तिकाय, षड्द्रव्य, नवतत्व/पदार्थ, षड्द्रव्यों का वैज्ञानिक दृष्टि से अध्ययन, रत्नत्रय, श्रमणाचार, श्रावकाचार।				
इकाई 4	प्रमुख जैन आचार्य– पुष्पदन्त भूतबलि, कुन्दकुन्द, पूज्यपाद देवनन्दी, समन्तभद्र, भट्ट अकलंक, विद्यानन्द, जिनसेन, शुभचन्द्र। भद्रबाहु, सिद्धसेन दिवाकर, जिनभद्रगणि, हरिभद्र, टीकाकार अभयदेव सूरि, मलयगिरि, हेमचन्द्र, यशोविजय				
इकाई 5	अनेकान्त, स्याद्वाद एवं नयवाद। प्रमुख जैन विद्वान् – पंडित सुखलाल संघवी, पंडित दलसुख मालवणिया, नथमल टाटिया, डॉ सागरमल जैन। पंडित कैलाशचन्द्र शास्त्री, डॉ. हीरालाल जैन, डॉ. ए.एन उपाध्ये, डॉ. महेन्द्र कुमार न्यायाचार्य। याकोबी, शुब्रिंग, एल्सडोर्फ, पद्मनाभ एस. जैनी,				

पाठ्य पुस्तकें:	1.जैन साहित्य का बृहद् इतिहास, भाग–1–2, पार्श्वनाथ विद्यापीठ, वाराणसी (उ.प्र.)। 2. जैन साहित्य का इतिहास, कैलाशचन्द्र शास्त्री, पूर्व पीठिका, भाग–1–2, भारतवर्षीय दिगम्बर जैन संघ, चौरासी मथुरा। 3.जैन धर्म और संस्कृति का इतिहास, आर्यिका चंदनामती, तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय, मुरादाबाद। **4.Primer of Principles of Jain Philosophy, N.L. Kachhara, Jain Academy of Scholars, Ahmedabad, 2022।**
संदर्भ पुस्तकें:	1. प्राकृत रत्नाकर, डॉ. प्रेमसुमन जैन, राष्ट्रीय प्राकृत अध्ययन एवं संशोधन संस्थान, श्रवणबेलगोला, 2012। 2. जैन आगम– तत्त्वानुप्रेक्षा, प्रो. धर्मचन्द जैन, जैन साहित्य एकेडेमी, मुंबई। 3. जैनधर्म के प्रभावक आचार्य, साध्वी संघमित्रा, जैन विश्व भारती, लाडनूं, षष्ठ संस्करण, 2019। 4. जैन आगम साहित्यः एक अनुशीलन, आचार्य देवेंद्रमुनि शास्त्री, तारकगुरु ग्रंथालय, उदयपुर। 5. जिनवाणी जैनागम विशेषांक, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मंडल, जयपुर। 6. भारतीय संस्कृति में जैन धर्म का योगदान, डॉ. हीरालाल जैन, कला एवं संस्कृति विभाग, राजस्थान सरकार, जयपुर।
अतिरिक्त इलेक्ट्रॉनिक संदर्भ सामग्री:	**1. https://onlinecourses.swayam2.ac.in/nou25_hs35/preview**